



### NEWSMAKERS

## UP CONTINUES TO MAINTAIN FIRST POSITION IN FOOD, SUGARCANE PRODUCTION, SAYS MINISTER

Varanasi: The joint divisional kharif productivity seminar-2024 of Varanasi, Prayagraj and Vindhyachal divisions was organized at Padma Vibhushan Girija Devi Cultural Complex, Chowkaghat on 24<sup>th</sup> June (Monday).

Addressing the seminar, the UP agriculture minister Surya Pratap Shahi said that such seminars are organized to



ensure food availability to the increasing population and make further action plans to improve the economic condition of the farmers. He said that for the last seven years, Uttar Pradesh has maintained the first position in food production and in sugarcane. He said that today the state has surplus food reserves. Today, Uttar Pradesh ranks first in food, milk, oilseeds and sugarcane. The production of oilseeds has increased by 105%.

Source: timesofindia.indiatimes.com, 25<sup>th</sup> June, 2024

## UP SUGARCANE FARMERS SHIFT VARIETIES TO COMBAT RED ROT MENACE

Red rot, referred to as the 'cancer' of the sugarcane crop, usually spreads during the rainy season. It is a fungal attack caused by the fungus *Colletotrichum Falcatum*. The infected sugarcane shows a progression in leaf colour change from green to orange and then to yellow in the third or fourth leaf. Then the leaves start drying from bottom to top.

Cane scientists and experts opine that the disease primarily affects the 'Co 0238' variety of sugarcane, the

high-yielding sugar variety which revolutionised sugar production in Uttar Pradesh. On 26th June, 2024 (Wednesday), there were reports of Red Rot resurfacing in the Terai region, promoting officials of the UP cane department to initiate district-wide meetings.



National Sugar Institute, Kanpur, the country's premier sugarcane research institute, has been at the forefront of promoting cane development.

Dr. Seema Paroha, Director, NSI Kanpur said that cases of Red Rot are arresting and it would be comparatively less. "The area of Co 0238 is gradually reducing from 90 to 55%. The farmers are replacing Co 0238 with other sugarcane varieties," Dr Paroha said. She further elaborated on the key measures that sugarcane farmers should adopt to avoid Red Rot from affecting sugarcane crop.

Source: chinimandi.com, 27<sup>th</sup> June, 2024

## GREEN HYDROGEN BOOST: SUGAR FACTORIES CAN CONTRIBUTE SIGNIFICANTLY TO INDIA'S GREEN ENERGY TRANSITION

The Indian sugar industry can play a crucial role in achieving the country's targets for green hydrogen and renewable energy production and consumption in following ways...

- Co-located Renewable Energy Plants: Sugar factories can set up co-located renewable energy plants (such as solar or wind) on their vast land holdings. These plants can generate electricity, which can be used for electrolysis to produce green hydrogen. By utilizing existing infrastructure, sugar factories contribute to both energy production and hydrogen supply.
- Bagasse-Based Bioenergy: Bagasse, a byproduct of sugar production, can be used to generate bioenergy. Sugar factories can invest in efficient bagasse-based cogeneration plants. Excess electricity generated can be used for green hydrogen production.
- Integrated Green Hydrogen Units: Sugar factories can

Continued on the next page ...



establish integrated green hydrogen units. These units combine renewable energy sources (solar/wind) with electrolyzers to produce hydrogen. The surplus hydrogen can be stored or supplied to industries and transport sectors.

- Research and Innovation: Collaborate with research institutions and industry experts to explore innovative solutions. Invest in R&D for efficient electrolysis techniques and hydrogen storage.
- Policy Advocacy: Advocate for policies that incentivize green hydrogen and renewable energy adoption. Engage with policymakers to create a conducive environment for investment.
- Job Creation and Rural Development: Green hydrogen projects create employment opportunities in rural areas. Sugar factories can contribute to local economic development.

In summary, the sugar industry can leverage its existing infrastructure, byproducts, and land resources to enhance India's green energy transition.

Source: chinimandi.com, 2<sup>nd</sup> July, 2024

## Legal Updates

PIL on interest on Delayed Cane Price Payment Rashtriya Kisan Mazdoor Sanghathan vs State of U.P. & others, listed before the Hon'ble Allahabad High Court, Lucknow bench is to be taken on 8<sup>th</sup> August, 2024.

## वर्तमान समय की जरूरत है मेकेनाइज्ड हार्वेस्टिंग

उत्तर प्रदेश में रहने वाले किसान सुखीराम एक पारिवारिक समारोह में हिस्सा लेने के लिए कुछ महीने पहले अपनी बुआ के घर गए थे। बुआ महाराष्ट्र के एक गाँव में रहती हैं और एक समृद्ध किसान परिवार का हिस्सा हैं। वहां प्रवास के दौरान एक दिन सुखीराम अपने फूफा जी के साथ उनके खेत पर गए तो आश्चर्यचकित रह गए। वहां खेतों में गन्ने की कटाई का काम चल रहा था पर ढेर सारे श्रमिकों द्वारा नहीं, बल्कि केन हार्वेस्टर द्वारा। जब उन्होंने फूफा जी से इस मशीन और तकनीक के बारे में बात की तो उन्हें इससे संबंधित बहुत सारी जानकारी मिली। फूफा जी ने बताया कि केन हार्वेस्टर द्वारा बड़ी आसानी से गन्ने व अन्य फसलों की कटाई हो जाती है वो भी कम श्रम और समय में।

उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, गुजरात और मध्य प्रदेश में गन्ने की खेती में श्रमिकों कि कमी को ध्यान में रखते हुए केन हार्वेस्टर के द्वारा गन्ने की कटाई और भराई का कार्य किया जा रहा है। जिसके सुविधापूर्ण संपादन हेतु एंटरप्रेन्योर मॉडल लागू किया गया है, जिससे श्रम और समय की बचत होती है और गन्ने की खेती में सरलता आती है। केन हार्वेस्टर से एक दिन में लगभग 2500 - 3000 कुंतल गन्ने की कटाई की जा सकती है एवं सम्पूर्ण खेत की कटाई एक बार में की जाती है, इन प्रदेशों में केन हार्वेस्टर से काटे गए सम्पूर्ण गन्ने की आपूर्ति हेतु एक बार में ही आपूर्ति पर्चा उपलब्ध करने की व्यवस्था की गयी है। केन हार्वेस्टर द्वारा गन्ना कटाई और भराई (H & T) को ध्यान में रखते हुए गन्ना विवरण एवं आपूर्ति के

नियमों में संशोधन करते हुए गन्ने का सर्वेक्षण और कलेण्डरिंग भी बुवाई के समय के अनुसार और Extraneous matter की कटौती सीमा का निर्धारण भी आवश्यकता के अनुसार निर्धारित किये जाने का प्रावधान है।

## प्रदेश वार केन हार्वेस्टर की उपलब्धता

क्रम संख्या	प्रदेश का नाम	केन हार्वेस्टर की संख्या
1	महाराष्ट्र	1094
2	कर्नाटक	481
3	तमिलनाडु	123
4	मध्य प्रदेश	70
5	गुजरात	51
6	आंध्र प्रदेश एवं तेलंगना	34
7	उत्तर प्रदेश	6
8	अन्य	9
	योग	1868

## गन्ने की खेती हेतु किसान भाइयों के लिए महत्वपूर्ण संदेश

### क्या करें

- गन्ना किसानों को मृदा की जांच के आधार पर संतुलित खाद की मात्रा का उपयोग करना चाहिए।
- समय -समय पर हरी खाद के रूप में ढैंचा या दलहनी फसलों की खेती करनी चाहिए।
- खेतों की उर्वरा शक्ति बनाये रखने के लिए गोबर खाद, वर्मी कम्पोस्ट एवं प्रेसमड का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
- कीटनाशकों का उपयोग कृषि वैज्ञानिकों/ विषय विशेषज्ञों की सलाह पर ही करना चाहिए।
- उन्नतशील प्रजातियों के रोग रहित बीज का ही उपयोग करना चाहिए।
- कीट एवं बीमारियों के रोकथाम के लिए व्यवहारिक एवं पर्यावरण के लिए उपयुक्त उपायों को अपनाना चाहिए, जैसे प्रकाश प्रंपच, जैविक नियंत्रण आदि।
- सिंचाई के लिए पानी का अधाधुंध प्रयोग न करते हुए नाली विधि, ड्रिप इरिगेशन, स्पिंकलर एवं रेन गन इत्यादि का प्रयोग करके जल की हानि को रोकना चाहिए।
- गन्ने के साथ आलू, चना, मटर, उरद, मूंग, सरसों एवं सब्जी वाली फसलों को सहफसल के रूप में लगाकर अधिक लाभ कमाना चाहिए।
- फसल चक्र को अपनाना चाहिए इससे मृदा की उर्वरता स्थिर रहती है, कीट बीमारियों का प्रकोप भी कम होता है एवं उपज में वृद्धि होती है।
- अच्छे उत्पादन के लिए गहरी जुताई करें और फसलों में खरपतवार न होने दें। खरपतवारों से पैदावार में भारी कमी आती है क्योंकि ये फसल को दिए जाने वाले पोषक तत्वों को पहले ग्रहण कर लेते हैं।





11. ऊँचे- नीचे खेतों को समतल करा लें, समतल खेतों में सिंचाई हेतु कम जल की आवश्यकता होती है।
12. परिवार की आय बढ़ाने के लिए खेती के साथ-साथ अन्य कृषि व्यवसाय जैसे पशुपालन, बागवानी इत्यादि भी करें।
13. गन्ने की सूखी पत्तियों को गन्ने की लाइनों के बीच में बिछा देना चाहिए, इससे सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है, मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ती है एवं खरपतवार कम उगते हैं जिससे पैदावार बढ़ती है।

### क्या न करें

1. उर्वरकों, कीटनाशकों, फफूंदी एवं खरपतवार नाशकों का अंधाधुंध प्रयोग नहीं करना चाहिए, इससे मृदा उर्वरता में कमी आती है एवं पर्यावरण व मानव जीवन पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। कैसर जैसी बीमारियां बढ़ती हैं।
2. सिंचाई में अंधाधुंध /आवश्यकता से अधिक पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए, इससे समय, पैसा एवं जल के दुरुपयोग होने के साथ-साथ फसल की जड़ों को ऑक्सीजन न मिलने के कारण नुकसान होता है।
3. बिना मृदा की जांच कराये असंतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
4. गन्ने की सूखी पत्ती व अन्य फसलों के अवशेषों को जलाना नहीं चाहिए, इससे मृदा उर्वरता का नुकसान होता है एवं मृदा में कार्बनिक पदार्थों की हानि होती है।
5. एक खेत में अधिक समय तक एवं एक ही प्रजाति की बुवाई नहीं करनी चाहिए इससे प्रजातियों के रोगों से संक्रमित होने के साथ-साथ उत्पादकता में कमी आती है।
6. अधिक उपज प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक यूरिया या उर्वरकता का उपयोग नहीं करना चाहिए।
7. वर्षा ऋतु में यूरिया का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि वर्षा जल के साथ नाइट्रोजन प्राकृतिक रूप से पौधों को उपलब्ध होती रहती है।
8. अपनी फसलों को विचौलियों को न बेंचकर समितियों के माध्यम से चीनी मिलों को ही बेंचना चाहिए।

## देश में 36 लाख टन सरप्लस चीनी का अनुमान, उद्योग ने मांगी चीनी निर्यात की अनुमति

देश में चीनी उद्योग के प्रमुख संगठन इंडियन शुगर एंड बायो-एनर्जी मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (इस्मा) ने चालू सीजन 2023-2024 में 36 लाख टन तक सरप्लस चीनी उत्पादन का अनुमान लगाया है। शुगर सीजन की शुरुआती यानि अक्टूबर 2023 में देश में लगभग 56 लाख टन का शुरुआती स्टॉक था। इस सीजन में लगभग 285 लाख टन की घरेलू खपत के बाद सितंबर 2024 के अंत तक चीनी का क्लोजिंग स्टॉक 91 लाख टन रहेगा। इस प्रकार 55 लाख टन चीनी के मानक स्टॉक के अलावा देश में 36 लाख टन चीनी का अनुमानित सरप्लस होगा जो चीनी मिलों पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ बढ़ाएगा।

इस्मा के अनुसार, देश में चीनी की घरेलू खपत और उपलब्धता की स्थिति काफी बेहतर है। एथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम के लिए भी कोई दिक्कत नहीं होगी। इस्मा ने मौजूदा स्थितियों को देखते हुए सरकार से सरप्लस चीनी के निर्यात की अनुमति

देने पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है। इस्मा का मानना है कि चीनी निर्यात की अनुमति देने से चीनी मिलों की वित्तीय स्थिति सुधरेगी और सुचारु संचालन में मदद मिलेगी।

चीनी उद्योग गन्ने के उचित और लाभकारी मूल्य (एफआरपी) में इस साल 25 रुपये प्रति कुंतल की बढ़ोत्तरी के बाद 340 रुपये कुंतल तय करने से चीनी के उत्पादन की लागत में वृद्धि का तर्क देते हुए सरकार से कई रियायतों की मांग कर रहा है।

Source; ruralvoice.in, 3<sup>rd</sup> July, 2024

## अच्छी मॉनसूनी बारिश गन्ना किसानों के लिए फायदेमंद, चीनी उत्पादन में बढ़ोत्तरी का अनुमान

देश के लगभग हर हिस्से में मॉनसून पड़ चुका है। मॉनसून के दूसरे हिस्से में खूब बारिश का अनुमान जताया गया है। अच्छी बारिश से गन्ना किसानों को फायदा पहुंचने वाला है। क्योंकि गन्ना की फसल को सबसे ज्यादा सिंचाई की जरूरत पड़ती है। मौसम विभाग की अच्छी बारिश के पूर्वानुमान से महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु के गन्ना उत्पादकों के चेहरे खिले हुए हैं। वहीं केंद्र सरकार ने बारिश के अच्छे संकेतों को देखते हुए अगले अक्टूबर-सितंबर सीजन में चीनी उत्पादन बढ़ने की संभावना जताई है।

गन्ना की फसल को उगाने के लिए अन्य फसलों की तुलना में ज्यादा पानी देना होता है। इसीलिए उपयुक्त सिंचाई वाले और भरपूर बारिश वाले इलाकों में ही किसान गन्ना की फसल उगाने पर जोर देते हैं। महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु सर्वाधिक चीनी उत्पादन वाले राज्य हैं। यहाँ भारी मात्रा में गन्ना की फसल उगाई जाती है।

भारतीय चीनी संघ इस्मा (ISMA) के अनुसार 30 सितंबर को समाप्त होने वाले चालू सीजन में चीनी का उत्पादन लगभग 320 लाख टन हो सकता है। प्रमुख चीनी उत्पादक 5 राज्यों में यूपी और महाराष्ट्र ने 15 अप्रैल 2024 तक उत्पादन आंकड़ा बीते साल की समान अवधि तक से पार कर लिया है। जबकि, बाकी 3 राज्यों ने बीते साल से कम उत्पादन दर्ज किया है। उत्तर प्रदेश ने 15 अप्रैल 2024 तक 101.45 लाख टन चीनी उत्पादन किया है, जो 15 अप्रैल 2023 तक 96.70 लाख टन चीनी उत्पादन से करीब 4 लाख टन अधिक है। इसी तरह महाराष्ट्र 109.20 लाख टन उत्पादन दर्ज किया है, जो बीते साल की समान अवधि के उत्पादन आंकड़े 105.90 लाख टन से करीब 4 लाख टन अधिक है।

Source; kisantak.in, 2<sup>nd</sup> July, 2024

## डेटा बोलता है: देश की मिट्टी की हालत चिंताजनक, सुधार नहीं हुआ तो उत्पादन घटेगा और लागत बढ़ेगी

पिछले महीने का शेष...

Continued on the next page ...



### जिंक सबसे अहम सूक्ष्म पोषक तत्व

मुख्य पोषक तत्व एनपीओ के बाद मैक्रोन्यूट्रिएंट्स में जिंक सबसे अहम सूक्ष्म पोषक तत्व है। जिंक सामान्य विकास और प्रजनन के लिए जरूरी है। जिंक दुनिया में सबसे अधिक सामान्य रूप से कमी वाला सूक्ष्म पोषक तत्व है। प्रमुख कृषि क्षेत्रों में जिंक की कमी वाली मिट्टी की उच्च कृषि उत्पादकता को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। जिंक पौधों को सूखे, गर्मी के तनाव और रोगजनक संक्रमणों के प्रति लड़ने की क्षमता का विकास करता है। अगर जिंक की कमी हो जाती है तो पत्तियों का आकार छोटा, पत्तियां पीले धब्बे वाली बन जाती हैं। जिंक की कमी से धान और गेहूं में पत्तियों का पीला पड़ना, मक्का और ज्वार में ऊपरी पत्तियां सफेद होना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

### हेल्दी मिट्टी के लिए उपाय और सिफारिशें

जैव पदार्थ की मात्रा बढ़ाने के लिए जैविक स्रोतों और जैव उर्वरकों का अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिए। फसल विविधीकरण और संरक्षण कृषि को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि मृदा की जैविक गुणवत्ता बढ़ाई जा सके। संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को अपनाकर मृदा में पोषक तत्वों की कमी को दूर किया जा सकता है। मृदा जांच प्रयोगशालाओं की स्थापना और मजबूती से मृदा की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जिंक, सल्फर, बोरान, आयरन आदि का समुचित उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उर्वरक के संतुलित उपयोग और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के बारे में किसानों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना और अन्य कृषि संबंधी योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन करके मृदा की उर्वरता और स्वास्थ्य में सुधार किया जा सकता है। यह भी जरूरी है कि मृदा की जैविक और पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए समय दृष्टिकोण अपनाया जाए।

Source: kisantak.in, 21<sup>st</sup> May, 2024

### Knowledge Box

#### Very important information for drivers driving on National Highway.

Understand the price of toll receipt and use it. What is hidden in this receipt found at the toll booth and why should it be kept safe?

What are the additional benefits? "Let's know today.

1. If your car suddenly stops while traveling on the toll road, the toll company is responsible for towing and carrying your car.
2. Toll collection company is responsible for replacing your car and providing petrol and exterior charging if your car runs out of petrol or battery on Express Highway. You should call 1033. Will help in ten minutes and will get 5 to 10 liters of petrol free. Even if the car gets punctured, you can contact this number for help.
3. Even if your car is involved in an accident you or someone coming with you should contact the phone number given on the toll receipt first.
4. If someone suddenly gets sick while traveling in a car, the person may need to be taken to the hospital immediately. It is the responsibility of the toll companies to deliver the ambulance to you in such a time.

### Team UPSMA visit Mango Garden, Malihabad for picnic on 30th June, 2024



### Sugar Shots

Sugar is not inherently bad for health. In fact, if you use brown sugar that is unprocessed or jiggery that would not be harmful to your health. All the health threats that come with sugar are due to the chemical processing which makes it strikingly white. Chemical-free unprocessed sugar is completely healthy because it is just the dried form of natural sugarcane juice. And any natural ingredient consumed in its organic form can never be unhealthy, processing it and adding chemicals makes it unhealthy.

### Did You Know!

Sugar cane juice has a high mineral content since it is an alkaline food, including magnesium, calcium, iron and potassium. The study's findings indicate that this beverage aids in preventing cancers, including breast and prostate cancer.

### Quiz No. 7

Is honey more nutritious than granulated, powdered or brown sugar?

Answer will be shared in next issue of UPSMA Newsletter.

### Answer of Quiz No. 6

Ques: Name the Products and By-products of sugar industry?

Answer: The main by-products are bagasse, molasses and press mud. The other products and their by-products of less commercial value are green leaves and tops, trash, Boiler ash and effluent generated by sugar industry

UPSMA Newsletter titled 'Varta' the Dialogue is providing information on sugar, sugar industry and sugar byproducts. We request you to share your thoughts and experience with us through write-ups, success stories, updates, photographs etc. We publish your creative in the next edition of this newsletter. You are requested to send your entries to be published in UPSMA newsletter through mail at [upsma@upsma.org](mailto:upsma@upsma.org). The newsletter will be uploaded on UPSMA website.